RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

हिंदी शोध के संदर्भ में आदिवासी क्षेत्र की बोलियाँ एवं उप बोलियाँ

पुष्पा बाई

शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 May 2019

Keywords
हिंदी, भाषा, बोली, उपभाषा।

ABSTRACT

हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में दूसरी आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यह हिंदुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी–फारसी शब्द कम हैं। हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हालांकि, हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है, क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया था। प्रत्येक भाषा का विकास बोलियों से ही होता है। जब बोलियों के व्याकरण का मानकीकरण हो जाता है और उस बोली के बोलने या लिखने वाले इसका ठीक से अनुकरण करते हुए व्यवहार करते हैं तथा वह बोली भावाभ्यक्ति में इतनी सक्षम हो जाती है कि लिखित साहित्य का रूप धारण कर सके तो उसे भाषा का स्तर प्राप्त हो जाता है। किसी बोली का महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि समाजिक व्यवहार और शिक्षा व साहित्य में उसका क्या महत्व है। अनेक बोलियाँ मिलकर किसी एक भाषा को समृद्ध करती हैं। इसी प्रकार एक समृद्ध भाषा अपनी बोलियों को समृद्ध करती है। अतः कहा जा सकता है कि भाषा व बोलियाँ परस्पर एक दूसरे को समृद्ध करते हैं।

प्रस्तावना

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते है और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का उपयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वन एक व्यवस्था में मिलकर एक सम्पूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं। व्यक्त नाद की वह समष्टि जिसकी सहायता से किसी एक समाज या देश के लोग अपने मनोगत भाव तथा विचार एक दूसरे पर प्रकट करते हैं। मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है। बोली। जबान। वाणी। विशेषकृ इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा बिना अच्छी तरह नहीं आती। भाषाविज्ञान के ज्ञाताओं ने भाषाओं के आर्य, सेमेटिक, हेमेटिक आदि कई वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग अलग शाखाएँ स्थापित की हैं और उन शाखाकों के भी अनेक वर्ग उपवर्ग बनाकर उनमें बड़ी बड़ी भाषाओं और उनके प्रांतीय भेदों, उपभाषाओं अथाव बोलियों को रखा है। जैसे हमारी हिंदी भाषा भाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषाओं के आर्य वर्ग की भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा हैय और ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। पास पास बोली जानेवाली अनेक उपभाषाओं या बोलियों में बहुत कुछ साम्य होता हैय और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। यही बात बड़ी बड़ी भाषाओं में भी है जिनका पारस्परिक साम्य उतना अधिक तो नहीं, पर फिर भी बहुत कुछ होता है। संसार की सभी बातों की भाँति भाषा का भी मनुष्य की आदिम अवस्था के अव्यक्त नाद से अब तक बराबर विकास होता आया हैय और इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है।

भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कुत और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है। इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा बिना अच्छी तरह सीखे नहीं आती। भाषाविज्ञान के ज्ञाताओं ने भाषाओं के आर्य, सेमेटिक, हेमेटिक आदि कई वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग अलग शाखाएँ स्थापित की हैं और उन शाखाओं के भी अनेक वर्ग–उपवर्ग बनाकर उनमें बड़ी बड़ी भाषाओं और उनके प्रांतीय भेदों, उपभाषाओं अथाव बोलियों को रखा है। जैसे हिंदी भाषा भाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषाओं के आर्य वर्ग की भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा हैय और ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उपभाषाएँ

RRIJM 2015, All Rights Reserved

या बोलियाँ हैं। पास पास बोली जानेवाली अनेक उपभाषाओं या बोलियों में बहुत कुछ साम्य होता हैय और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। यही बात बड़ी बड़ी भाषाओं में भी है जिनका पारस्परिक साम्य उतना अधिक तो नहीं, पर फिर भी बहुत कुछ होता है। संसार की सभी बातों की भाँति भाषा का भी मनुष्य की आदिम अवस्था के अव्यक्त नाद से अब तक बराबर विकास होता आया हैय और इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कृत और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है। प्रायः भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिये लिपियों की सहायता लेनी पड़ती है। भाषा और लिपि, भाव व्यक्तीकरण के दो अभिन्न पहलू हैं। एक भाषा कई लिपियों में लिखी जा सकती है और दो या अधिक भाषाओं की एक ही लिपि हो सकती है। उदाहरणार्थ पंजाबी, गुरूमुखी तथा शाहमुखी दोनो में लिखी जाती है जबकि हिन्दी, मराठी, संस्कृत, नेपाली इत्यादि सभी देवनागरी में लिखी जाती है। भाषा का जन्म पहले हुआ और उसकी सार्वभौमिकता और एकात्मकता के लिए लिपि का आविष्कार संभव हुआ। बोली या भाषा की सही–सही अभिव्यक्ति की कसौटी ही लिपि की सार्थकता है। प्रतिलेखन और लिप्यांतरण के दृष्टिकोण से देवनागरी लिपि अन्य उपलब्ध लिपियों से बहुत ऊपर है। रोमन और फारसी लिपियां तो इसके समक्ष कहीं भी नहीं ठहरतीं। जहां तक देवनागरी में जटिलता की दुहाई का प्रश्न है, मात्र समझाने के लिए रोमन में 26 अक्षर हैं। वास्तव में यदि स्माल और कैपिटल आदि पर विचार करें तो ये 26•4=104 अक्षर बनते हैं, जो सर्वाधिक हैं और इतनी संख्या होने पर भी श्जो बोला जाए, वही लिखा जाएश उक्ति पर खरे नहीं उतरते, जबकि देवनागरी लिपि में आप जो सोचते हैं, जो बोलते हैं या जो चाहते हैं वही लिखकर वही पढ़ भी सकते हैं। है किसी अन्य लिपि में यह विशेषता? जबकि देवनागरी विश्व की किसी भी भाषा में जो बोला जाए वही लिख सकने में पूर्णतया सक्षम है। वह भी तब, जब इसमें मात्र 52 अक्षर (14 स्वर और 38 व्यंजन) हैं।

उपभाषा– अगर किसी बोली में साहित्य रचना होने लगती है और क्षेत्र का विकास हो जाता है तो वह बोली न रहकर उपभाषा बन जाती है।

बोली– एक छोटे क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है। बोली में साहित्य रचना नहीं होती है।

हिन्दी की अनेक बोलियाँ (उपभाषाएँ) हैं, भारत में कुल 18 बोलियाँ हैं, जिनमें अवधी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बघेली, हड़ौती,भोजपुरी, हरयाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, मालवी, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया, कुमाउँनी, मगही आदि प्रमुख हैं। इनमें से कुछ में अत्यंत उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना हुई है। ऐसी बोलियों में ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं। यह बोलियाँ हिन्दी की विविधता हैं और उसकी शक्ति भी। वे हिन्दी की जड़ों को गहरा बनाती हैं। हिन्दी की बोलियाँ और उन बोलियों की उपबोलियाँ हैं जो न केवल अपने में एक बड़ी परंपरा, इतिहास, सभ्यता को समेटे हुए हैं वरन स्वतंत्रता संग्राम, जनसंघर्ष, वर्तमान के बाजारवाद के खिलाफ भी उसका रचना संसार सचेत है। मोटे तौर पर हिंद (भारत) की किसी भाषा को शहिंदीश कहा जा सकता है। अंग्रेजी शासन के पूर्व इसका प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता था। पर वर्तमानकाल में सामान्यतः इसका व्यवहार उस विस्तृत भूखंड की भाषा के लिए होता है जो पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर पश्चिम में अंबाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल की तराई, पूर्व में भागलपुर, दक्षिण पूर्व में रायपुर तथा दक्षिण–पश्चिम में खंडवा तक फैली हुई है। हिंदी के मुख्य दो भेद हैं – पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी।

पश्चिमी हिन्दी

पश्चिमी हिंदी का विकास शौरसैनी अपभ्रंश से हुआ है। इसके अंतर्गत पाँच बोलियाँ हैं – खड़ी बोली, हरियाणवी, ब्रज, कन्नौजी और बुंदेली। खड़ी बोली अपने मूल रूप में मेरठ, रामपुर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर,बिजनौर,बागपत के आसपास बोली जाती है। इसी के आधार पर आधुनिक हिंदी और उर्दू का रूप खड़ा हुआ। बांगरू को जाटू या हरियाणवी भी कहते हैं। यह पंजाब के दक्षिण पूर्व में बोली जाती है। कुछ विद्वानों के अनुसार बांगरू खड़ी बोली का ही एक रूप है जिसमें पंजाबी और राजस्थानी का मिश्रण है। ब्रजभाषा मथुरा के आसपास ब्रजमंडल में बोली जाती है। हिंदी साहित्य के मध्ययुग में ब्रजभाषा में उच्च कोटि का काव्य निर्मित हुआ। इसलिए इसे बोली न कहकर आदरपूर्वक भाषा कहा गया। मध्यकाल में यह बोली संपूर्ण हिंदी प्रदेश की साहित्यिक भाषा के रूप में मान्य हो गई थी। पर साहित्यिक ब्रजभाषा में ब्रज के ठेठ शब्दों के साथ अन्य प्रांतों के शब्दों और प्रयोगों का भी ग्रहण है। कन्नौजी गंगा के मध्य दोआब की बोली है। इसके एक ओर ब्रजमंडल है और दूसरी ओर अवधी का क्षेत्र। यह ब्रजभाषा से इतनी मिलती जुलती है कि इसमें रचा गया जो थोड़ा बहुत साहित्य है वह ब्रजभाषा का ही माना जाता है। बुंदेली बुंदेलखंड की उपभाषा है। बुंदेलखंड में ब्रजभाषा के अच्छे कवि हुए हैं जिनकी काव्यभाषा पर बुंदेली का प्रभाव है।

पूर्वी हिन्दी

पूर्वी हिंदी की तीन शाखाएँ हैं – अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी। अवधी अर्धमागधी प्राकृत की परंपरा में है। यह अवध में बोली जाती है। इसके दो भेद हैं – पूर्वी अवधी और पश्चिमी अवधी। अवधी को बैसवाड़ी भी कहते हैं। तुलसी के रामचरितमानस में अधिकांशतरू पश्चिमी अवधी मिलती हैं और जायसी के पदमावत में पूर्वी अवधी। बघेली बघेलखंड में

प्रचलित है। यह अवधी का ही एक दक्षिणी रूप है। छत्तीसगढ़ी पलामू (झारखण्ड) की सीमा से लेकर दक्षिण में बस्तर तक और पश्चिम में बघेलखंड की सीमा से उड़ीसा की सीमा तक फैले हुए भूभाग की बोली है। इसमें प्राचीन साहित्य नहीं मिलता। वर्तमान काल में कुछ लोकसाहित्य रचा गया है। हिंदी प्रदेश की तीन उपभाषाएँ और हैं – बिहारी,राजस्थानी और पहाड़ी हिंदी।

बिहारी

बिहारी की तीन शाखाएँ हैं – भोजपुरी, मगही और मैथिली। बिहार के एक कस्बे भोजपुर के नाम पर भोजपुरी बोली का नामकरण हुआ। पर भोजपुरी का प्रसार बिहार से अधिक उत्तर प्रदेश में है। बिहार के शाहाबाद, चंपारन और सारन जिले से लेकर गोरखपुर तथा बारस कमिश्नरी तक का क्षेत्र भोजपुरी का है। भोजपुरी पूर्वी हिंदी के अधिक निकट है। हिंदी प्रदेश की बोलियों में भोजपुरी बोलनेवालों की संख्या सबसे अधिक है। इसमें प्राचीन साहित्य तो नहीं मिलता पर ग्रामगीतों के अतिरिक्त वर्तमान काल में कुछ साहित्य रचने का प्रयत्न भी हो रहा है। मगही के केंद्र पटना और गया हैं। इसके लिए कैथी लिपि का व्यवहार होता है। पर आधुनिक मगही साहित्य मुख्यतः देवनागरी लिपि में लिखी जा रही है। मगही का आधुनिक साहित्य बहुत समृद्ध है और इसमें प्रायः सभी विधाओं में रचनाओं का प्रकाशन हुआ है।मैथिली एक स्वतंत्र भाषा है जो संस्कृत के करीब होने के कारण हिंदी से मिलती जुलती लगती है। परन्तु, मैथिली हिंदी से अधिक बांग्ला के निकट है। मैथिली गंगा के उत्तर में दरभंगा के आसपास प्रचलित है। इसकी साहित्यिक परंपरा पुरानी है। विद्यापति के पद प्रसिद्ध ही हैं। मध्ययुग में लिखे मैथिली नाटक भी मिलते हैं। आधुनिक काल में भी मैथिली का साहित्य निर्मित हो रहा है। मैथिली भाषा भारत और नेपाल के संविधान में राजभाषा के रूप में भी दर्ज है। नेपाल में दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा मैथिली है।

राजस्थानी

राजस्थानी का प्रसार पंजाब के दक्षिण में है। यह पूरे राजपूताने और मध्य प्रदेश के मालवा में बोली जाती है। राजस्थानी का संबंध एक ओर ब्रजभाषा से है और दूसरी ओर गुजराती से। पुरानी राजस्थानी को डिंगल कहते हैं। जिसमें चारणों का लिखा हिंदी का आरंभिक साहित्य उपलब्ध है। राजस्थानी में गद्य साहित्य की भी पुरानी परंपरा है। राजस्थानी की चार मुख्य बोलियाँ या विभाषाएँ हैं– मेवाती, मालवी, जयपुरी और मारवाड़ी। मारवाड़ी का प्रचलन सबसे अधिक है। राजस्थानी के अंतर्गत कुछ विद्वान् भीली को भी लेते हैं।

पहाड़ी

पहाड़ी उपभाषा राजस्थानी से मिलती जुलती हैं। इसका प्रसार हिंदी प्रदेश के उत्तर हिमालय के दक्षिणी भाग में नेपाल से शिमला तक है। इसकी तीन शाखाएँ हैं – पूर्वी, मध्यवर्ती और पश्चिमी। पूर्वी पहाड़ी नेपाल की प्रधान भाषा है जिसे नेपाली और परबतिया भी कहा जाता है। मध्यवर्ती पहाड़ी कुमायूँ और गढ़वाल में प्रचलित है। इसके दो भेद हैं – कुमाउँनी और गढ़वाली। ये पहाड़ी उपभाषाएँ नागरी लिपि में लिखी जाती हैं। इनमें पुराना साहित्य नहीं मिलता। आधुनिक काल में कुछ साहित्य लिखा जा रहा है। कुछ विद्वान् पहाड़ी को राजस्थानी के अंतर्गत ही मानते हैं। पश्चिमी पहाड़ी हिमाचल प्रदेश में बोली जाती है। इसकी मुख्य उपबोलियों में मंडियाली, कुल्लवी, चाम्बियाली, क्यौंथली, कांगड़ी, सिरमौरी, बघाटी और बिलासपुरी प्रमुख हैं।

आदिवासी भाषाएँ

आदिवासियों एवं वनों का घनिष्ठ सम्बंध है। हमारी संस्कृति मूलतरू अरण्य संस्कृति रही है। वन एवं वन्य जीवों को वहाँ के स्थानीय वनवासियों द्वारा अपने परिवार का अंग माना गया। वनवासी समाज द्वारा वनों में स्वंत्रतापूर्वक रहकर वहीं से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुये सदैव वनों को संरक्षित करने का कार्य किया है। विगत कुछ दशकों में आदिवासियों एवं वनों के बीच दूरी बढ़ी है। वे वनवासी जो वनों एवं वन्यजीवों के स्वाभाविक मित्र थे, उन्हें वन का विरोधी मानते हुए उनके परम्परागत अधिकारों में कटौती की गई। हाल ही में भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति व अन्य पारम्परिक वनवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम–2006 के माध्यम से पुनरू आदिवासियों को उनका पारम्परिक अधिकार दिलाने की दिशा में ठोस कदम उठाया गया। भारतीय उपमहाद्वीप में अलग–अलग भाषाई समुदायों की एक बड़ी संख्या है, जो कई बार एक आम भाषा और संस्कृति साझा करते हैं और फिर, कई बार बोलियों में भारी अंतर पर खड़े होते हैं। यह पहले से ही स्वीकार किया जाता है कि महानगरीय और महानगरीय आबादी भाषा और संचार के तरीके का स्वदेशी परिष्कृत संस्करण रखती है। हालाँकि, इस संदर्भ में दिलचस्पी की बात यह है कि देश में जनजातियों और जनजातीय आबादी की भाषा के उपयोग का तरीका है।

2001 की भारतीय जनगणना के अनुसार, आदिवासी लोग राष्ट्र की कुल आबादी का 8.2 प्रतिशत हैं। आदिवासी लोग मूल रूप से भारत में रहने वाले एक आदिवासी समुदाय हैं, जिनके पास अपने रिवाज और भाषाएं हैं। अपने स्वयं के मधुर और तर्कसंगत जीवन शैली के साथ, भारतीय आदिवासी अपने जीवन में एकांत में रहते हैं। जैसे, यह लंबे समय से बहुत जिज्ञासा का विषय बना हुआ है और वे जिस तरह के दैनिक जीवन का नेतृत्व करते हैं, उसके बारे में शोध या भाषा की शैली भी कार्यरत हैं। वास्तव में, भारतीय आदिवासी भाषाएं शायद दैनिक चर्चा का दूसरा सबसे प्रचलित विषय है, जिसमें

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सबसे पहले आदिवासी नृत्य और आभूषणों को मान्यता दी जाती है।

भारतीय जनजातीय भाषा को अनिवार्य रूप से लोक भाषाओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें उनके स्वयं के कोई साहित्यिक विनिर्देश नहीं हैं और वे जातीय समूहों के लोगों द्वारा बोली जाती हैं जो अपेक्षाकृत पृथक समूहों में रहना पसंद करते हैं। भारतीय जनजातीय भाषाओं को केवल आदिवासी लोक द्वारा उपयोग की जाने वाली पारंपरिक भाषाओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। भारत में आदिवासी समुदायों द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषाएं वास्तव में काफी जटिल हैं, लेकिन फिर भी भारत के अतीत और लगभग ओवरशेड महिमा के अनमोल अवशेष हैं। यह सटीक कारण है कि उन्हें गाने, किंवदंतियों और अन्य कहानियों के रूप में मौखिक रूप से संरक्षित किया जाता है। कुछ प्रमुख आदिवासी भाषा–भाषी समूह शामिल हैंरू गारो जनजाति, चकमा जनजाति, नागा जनजाति, गोंड जनजाति, मिजो जनजाति, मुंडा जनजाति, संथाली जनजाति, खसिया जनजाति, उरांव जनजाति और मणिपुर जनजाति।

भारत में प्रचलित कुछ आदिवासी भाषाएं अबुझमारिया, गारो, औरिया, त्संगला, सौराष्ट्र आदि हैं। गारो भाषा गारो पहाड़ियों, मेघालय, त्रिपुरा, पश्चिमी असम और नागालैंड में और आसपास रहने वाले आदिवासी समुदायों द्वारा बोली जाती है। इस भाषा की कई बोलियों में मेगाम, चिसाक, अटॉन्ग आदि शामिल हैं। एक अन्य जनजातीय भाषा अबुझमारिया है जो बस्तर जिले के अबुझमार पहाड़ियों के लोगों द्वारा बोली जाती है। हिल मारिया आदिवासी समुदाय अपने लोगों के साथ बातचीत करने के लिए अपने माध्यम के रूप में इस भाषा का उपयोग करता है। यह भाषा द्रविड़ भाषा परिवार की है। सौराष्ट्र एक अन्य आदिवासी भाषा है जिसे पटनौली भी कहा जाता है। आंध्र प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले आदिवासी समुदाय, कर्नाटक के कुछ हिस्सों, उत्तरी आर्कोट और चेन्नई इस भाषा में बोलते हैं। इन जनजातीय भाषाओं के अलावा, कुछ अन्य जनजातीय भाषाएँ हैं, जिनका नाम गादाबा है जो उड़ीसा के कोरापुट जिले के लोगों द्वारा बोली जाती है। अरिया मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों और अरुणाचल प्रदेश के कुछ गांवों में बोली जाने वाली जंगला भाषा है।

एक विकसित अतीत और प्रबुद्ध शैक्षिक हस्तक्षेप के कारण भारतीय जनजातीय भाषाएँ बहुत सुव्यवस्थित और व्यवस्थित हैं। गारो और चकमा भाषाओं में उनके उच्चारण के लिए थोड़ी चीनी संकेत है। गारो और माघ भाषाओं के बीच एक प्राथमिक समानता निहित है, क्योंकि दोनों जनजातियाँ एक ही मूल की हैं। मुंडा, संथाली, कोल, खसिया, गारो और कुरुख भाषा परस्पर भाषाएं हैं। मुंडा और कुरुख को समान भाषा के रूप में माना जाता है, दोनों की वाक्य रचना और क्रिया लगभग समान हैं। मुंडा, संथाली और कोल भाषाएँ इंडो–आर्यन भाषाओं की तुलना में अधिक प्राचीन हैं। ये आदिवासी भाषाएँ आगे ऑस्ट्रो–एशियाई, भारत–चीनी और चीनी–तिब्बती, तिब्बती–बर्मन या द्रविड़ परिवारों से संबंधित हैं। जैसा कि ये आदिवासी समूह ज्यादातर उल्लेखित स्थानों से चले गए हैं, उन्होंने मुख्यतः उन राष्ट्रों से अपनी भाषा को अपनाया है। भारत में सभी आदिवासी समुदायों की अपनी विशिष्ट भाषा है। भाषाविज्ञानियों ने भारत के सभी आदिवासी भाषाओं को मुख्यतः तीन भाषा परिवारों में रखा है। द्रविड़ आस्ट्रिक और चीनी–तिब्बती। लेकिन कुछ आदिवासी भाषाएं भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत भी आती हैं। आदिवासी भाषाओं में 'भीली' बोलने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है जबकि दूसरे नंबर पर 'गोंडी' भाषा और तीसरे नंबर पर 'संताली' भाषा है।

भारत की 114 मुख्य भाषाओं में से 22 को ही संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इनमें हाल–फिलहाल शामिल की गयी संताली और बोड़ो ही मात्र आदिवासी भाषाएं हैं। अनुसूची में शामिल संताली (0.62), सिंधी, नेपाली, बोड़ो (सभी 0.25), मिताइ (0.15), डोगरी और संस्कृत भाषाएं एक प्रतिशत से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं। जबकि भीली (0.67), गोंडी (0.25), टुलु (0.19) और कुडुख 0.17 प्रतिशत लोगों द्वारा व्यवहार में लाए जाने के बाद भी आठवीं अनुसूची में दर्ज नहीं की गयी हैं। (जनगणना 2001) भारतीय राज्यों में एकमात्र झारखण्ड में ही 5 आदिवासी भाषाओं – संताली, मुण्डारी, हो, कुडुख और खड़िया – को 2011 में द्वितीय राज्यभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है।

सांकेतिक तस्वीर

भाषिक दृष्टि से भारत में आदिवासी भाषाओं के पांच प्रमुख भाषायी परिवार हैं –

ंआस्ट्रो–एशियाटिक भाषा परिवाररू भारत का एक प्राचीन भाषा परिवार कोल है। कोल भाषा परिवार को आस्ट्रो – एशियाटिक भी कहा जाता है। इसका अर्थ है कि दक्षिण –पूर्वी एशिया के द्वीप समूहों से लेकर प्रशांत महासागर के छोटे – बड़े द्वीपों को समेटते हुए आस्ट्रेलिया तक एक ही परिवार की भाषा बोली जाती है। यह आदिवासी भाषा परिवार मुख्य रूप से भारत में झारखंड, छत्तीसगढ, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के ज्यादातर हिस्सों में बोली जाती है। संख्या की दृष्टि से इस परिवार की सबसे बड़ी भाषा संथाली या संताली है। इस परिवार की अन्य प्रमुख भाषाओं में हो, मुंडारी, खड़िया, सावरा इत्यादी प्रमुख भाषाएं हैं।

इ) चीनी–तिब्बती भाषा परिवाररू इस परिवार की ज्यादातर भाषाएं भारत के सात उत्तर–पूर्वी राज्यों में बोली जाती है। जिनमें नगा, मिजो, म्हार, मणिपुरी, तांगखुल, खासी, दफला, आओ आदि भाषाएं प्रमुख हैं।

ब) द्रविड़ भाषा परिवाररू यह भाषा परिवार भारत का दूसरा सबसे बड़ा भाषायी परिवार है। इस परिवार की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सदस्य गैर—आदिवासी भाषाएं ज्यादातर दक्षिण भारत में बोली जाती हैं। जिसमें तमिल, कन्नड़, मलयालम और तेलुगू भाषाएं हैं। परंतु द्रविड़ परिवार की आदिवासी भाषाएं पूर्वी, मध्य और दक्षिण तक के राज्यों में बोली जाती हैं। गोंडों की गोंडी, उरांव, किसान और धांगर समुदायों की कुडुख और पहाड़िया की मल्तो या मालतो द्रविड़ परिवार की प्रमुख आदिवासी भाषाएं हैं।

क) अंडमानी भाषा परिवाररू जनसंख्या की दृष्टि से यह भारत का सबसे छोटा आदिवासी भाषाई परिवार है। इसके अंतर्गत अंडबार—निकाबोर द्वीप समूह की भाषाएं आती हैं, जिनमें अंडमानी, ग्रेड अंडमानी, ओंगे, जारवा आदि प्रमुख हैं।

म) भारोपीय आर्य भाषा परिवाररू भारत की दो तिहाई से अधिक गैर—आदिवासी आबादी हिन्द आर्य भाषा परिवार की कोई न कोई भाषा विभिन्न स्तरों पर प्रयोग करती है। जैसे, संस्कृत, हिन्दी, बांग्ला, गुजराती, कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी, उड़िया, असमिया, मैथिली, भोजपुरी, मारवाड़ी, गढ़वाली, कोंकणी आदि भाषाएं। परंतु राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश आदि राज्यों के भीलों की वर्तमान भीली, भिलाला और वागड़ी, इसी भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत आती है।

निष्कर्ष

अगर हिन्दी भाषा की बोलियों और उपभाषा की बात करें तो हम पाते हैं कि उत्तर भारत की भाषाओं में बोली निरंतरता है जिसका अर्थ है कि जैसे—जैसे आप किसी भी दिशा में इसे ले जाते हैं, स्थानीय भाषा धीरे—धीरे बदलती है। हिन्दी संस्कृत, प्राकृत, फारसी और कुछ अन्य भाषाओं के विभिन्न संयोजनों से निर्मित भाषाओं का समूह है। उत्तर भारतीय क्षेत्रों पर शासन करने वाले प्रमुख राज्यों ने अलग—अलग समय पर अलग—अलग भाषाओं को चुना और विभिन्न राज्यों को अपने ही राज्य के लिए एक पहचान बनाने के लिए चुना। इस पूरी राजनीतिक परिस्थिति ने मिश्रित और नई भाषाओं को विकसित करने के लिए संयुक्त भाषाओं का सर्वश्रेष्ठ चयन किया और हिन्दी उनके बीच एक है।

संदभ ग्रंथ

[1]. ''तकनीक क्रांति से दुनिया में बढ़ी हिंदी की धमक, बाजार ने भी माना लोहा''. मूल से 18 सितंबर 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 सितंबर 2019.

[2]. ''तकनीक से रोजगार की भाषा बन रही हिन्दी''. मूल से 18 सितंबर 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 सितंबर 2019.

[3]. ''इंटरनेट पर चमक रही हमारी हिन्दी''. Dainik Jagran- मूल से 2 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 1 मार्च 2019.

[4]. ''वेब मीडिया ने बढ़ाया हिंदी का दायरा – Amarujala- Amar Ujala- मूल से 2 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 1 मार्च 2019.

[5]. ''भारत में हिंदी के ट्वीट करना हो रहा है लोकप्रिय, रिसर्च में आया सामने''. https//www-livehindustan-com- मूल से 28 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 1 मार्च 2019.

RRIJM 2015, All Rights Reserved